Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, NOV-DEC, 2018, VOL- 6/48

साठोत्तरी कहानीकार मणिका मोहिनी के कथा साहित्य में मूल्य विघटन

(श्रीमती) मधु सारस्वत, Ph. D.

(हिन्दी विभाग), श्रीमती रामदुलारी कॉलेज, ओल, मथुरा,

(सम्बद्ध : डॉ0 भीमराव अ0 विश्वविद्यालय, आगरा)

Abstract

मणिका मोहिनी साठेत्तरी हिन्दी साहित्य की एक बेवाक और स्पष्ट वादी लेखिका हैं। स्वतंत्रता के पश्चात पाश्चाव्यानुकरण एवं आधुनिकता के कारण बदलती मनोवृत्ति ने परम्परागत नारी मूल्यों को हिलाकर रखदिया है। मणिका मोहिनी के साहित्य में नारी मूल्यों व नैतिकता का पतन स्पष्ट परिलक्षित होता है। रोजी–रोटी से हटकर मणिकाजी ने व्यक्ति के मानसिक, भावनिक संघर्ष को, व्यक्ति में पनपनेवाली अधूरेपण की वृत्ति या अतृप्त भावना को जैसे महसूस किया वैसे ही कविता और कहानियों में प्रस्तुत किया है। पाश्चात्य सभ्यता का आक" र्ण तथा अनुकरण और परंपरा का पीडा आदि के आपसी संघर्ष में आत्मकेंद्री व्यक्ति दिशाहीन, निराश और अकेलेपन की मानसिकता का शिकार बनता गया । शिक्षित और कामकाजी पति–पत्नी में संघर्ष होने लगा है। स्त्री और पुरूष विवाह के बंधन नकारने लगे हैं। जिसका गंभीर और गहरा परिणाम दांपत्य संबधों पर हो रहा है। आहार, निद्रा और मैथुन इन जैविक जरूरतों में से सामाजिक प्रतिष्ठा, नैतिकता के डर से दमित मैथुन अतृप्त कामभावना का यथार्थ एवं बोल्ड एप्रोच के साथ चित्रण मणिका जी के साहित्य में परिलक्षित है।

***अध्ययन के उद्देश्य** : साठेत्तरी हिन्दी साहित्यकारा मणिका मोहिनी के साहित्य का वर्तमान युवा पीढी पर प्रभाव एंव साहित्य में मूल्य विघटन का विश्लेषणत्मक अध्ययन करना।*

***पारिभाषिक शब्दावली* (Key-words)** : *साठोत्तरी साहित्य , मूल्य विघटन, नैतिक पतन, सामाजिक चेतना, नारी समानता।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय : मणिकाजी की सभी कहानियाँ भोगे हुए यथार्थ की कहानियाँ है। इन की कहानियों में नैतिक–अनैतिक, ‘ एंव अश्लीलता से ऊपर उठकर मानविय संबधों का यथार्थ से अतियथार्थ चित्रण दिखाई देता है। मणिका जी की कविता और कहानियों में समय सापेक्ष्य युग की अनुभूतियाँ और युग का स्पंदन दिखाई देता है। रोजी–रोटी से हटकर मणिकाजी ने व्यक्ति के मानसिक, भावनिक संघ" ं को, व्यक्ति में पनपनेवाली अधूरेपण की वृत्ति या अतृप्त भावना को जैसे महसूस किया वैसे ही कविता और कहानियों में प्रस्तुत किया है। मणिकाजी की कुछ कहानियाँ पाठक को इतनी ज्यादा भाति है कि उसे लगता है जैसे वह मणिका की कहानी न होकर अपनी आपबीती हैं जिसका सामाजिक प्रति" ठा तथा

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नैतिकता के डर से दमन किया था। समाज, प्रति" ठा नैतिकता के डर से तन–मन की अपेक्षाओं का दमन करनेवाली नारी की मानसिक द्वन्द्वात्मक स्थिति का मनोवैज्ञानिक चित्रण साहित्य में दिखाई देता है। मणिका जी नायिका हरपल जीजिवि" ाा रखती है। सामाजिक मान्यता, संस्कृति, प्रति" ठा, नैतिकता –अनैतिकता, ' लील–अश्लीलता आदि के सामाजिक नियम, बंधनों को तोड़कर तन और मन की इच्छा पूर्ति के लिए हरपल जीना चाहती है। अपने जीवन को मुक्त पंछी (सामाजिक व्यवस्था के बंधन से मुक्त) की तरह अपनी अपेक्षा रूपी पर में जितना बल है, उतना ऊँचा उड़ना चाहती है। जिजीवि" ाा की ऊँची उड़ान उनके साहित्य में चित्रिण नायिकाओं में दिखाई देता है। मणिकाजी की कहानियाँ अपने समय की सच्ची तस्वीर है। हरपल जीवन जीने की लालसा, पाश्चात्य सभ्यता का आक" ॉण तथा अनुकरण और परंपरा आदि के आपसी संघ" ॉ में आत्मकेंद्री व्यक्ति दिशाहीन, निराश और अकेलेपन की मानसिकता का शिकार बनता गया । वे व्यक्ति जीवन की सच्चाई यथार्थ रूप में देखती है , उसी तथ्य को निड़रता से कहानी में चित्रिण करती है। सामाजिक नैतिकता के डर से तथ्य और असल घटना को ' ाालीनता रूपी वस्त्र पहनाकर पाठक के सामने कहानी अथवा कविता के रूप में रखना उनकी वृत्ति नहीं है, बल्कि सामाजिक, पारिवारिक जीवन में अतृत्त कामभावना से बेचैन, अकेलेपन, निराशा, घुटन, कुण्ठा, दमन से पीड़ित व्यक्ति संबंधों का सजीव और यथार्थ चित्रण मणिकाजी की रचनाओं का आक" ॉण एवं मुलाधार रहा है। आर्थिक दृ" ट से आत्मर्निभर होने के कारण पुरू" ाप्रधान सामाजिक मान्यताएँ एवं व्यवस्था का प्रतिकार करते हुए हर पल जीने की कोशिश करने वाली आज की आधुनिक भारतीय नारी का यथार्थ चित्रण कहा है दर्द, दो पाटन के बीच, पूरक किनारें, पतिव्रता, ढ़ाई आखर प्रेम का , कोई सजा नहीं, चरमबिंदु, तलाश आदि मणिका की कहानियों का प्रमुख विषय रहा है।स्त्री और पुरूष समाज जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। जब दोनों अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाते है– तो वह परिवार सामाजिक अस्मिता बनाया है। आज की आधुनिक सामाजिक व्यवस्था की विभक्त पारिवारिक स्थिति से दांपत्य जीवन में संघ" ॉ, बेबनाव बढ़ता ही जा रहा है। भारतीय समाज में परंपरागत रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन होकर विभक्त परिवार पति–पत्नी और उनके बच्चों तक ही सीमित हो गया है पारिवारिक दांपत्य जीवन एक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पवित्र बंधन है, जो त्याग, साहचर्य एवं समर्पन का प्रतीक है। विश्वास की नींव पर चलनेवाला सफल दांपत्य जीवन समाज व्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषण है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय स्त्री शिक्षा में प्रगति हो रही है। नारी पुरू" ाों के साथ कदम से कदम मिलाकर हर क्षेत्र में कार्य करने लगी है। पत्नी जब अन्य पुरू" ाों के साथ कंपनी, ऑफिस में काम करने लगी। उस समय पति–पन्नी के संबंध में संदेह की वृत्ति बढ़ने लगी, जिसका गंभीर परिणाम दांपत्य जीवन पर होने लगा है। पति–पत्नी के बीच पनपनेवाले विश्वास को ठेस लग गयी है। जिससे पारिवारिक संबधों में दरारे भर गई और व्यक्ति परिवार में भी अकेला पड़ने लगा है। पढ़ी लिखी भारतीय नारी पुरू" ाप्रधान व्यवस्था का प्रतिकार करने लगी है किन्तु वह पूरी तरह से पुरू" ा प्रधान मानसिकता से मुक्त नहीं हो पायी है। शिक्षित और कामकाजी पति–पत्नी में संघर्ष होने लगा है। स्त्री और पुरूष विवाह के बंधन नकारने लगे हैं। जिसका गंभीर और गहरा परिणाम दांपत्य संबधों पर हो रहा है। आज की आधुनिक भारतीय नारी, पति–पत्नी के लिए ' ाारीरिक भूख मिटाने का साधन मात्र नहीं रही है, बल्कि पति के साथ आज वह जीवन साथी बनकर हर क्षेत्र मे समानता की भूमिका अदा कर रही है। आधुनिक शिक्षा एवं संवैधानि सुरक्षा के बलपर स्वांतत्र्योत्तर आर्थिक दृ" ट से आत्मनिर्भर भारतीय नारी पति को परमेश्वर के बजाए जीवन साथी, सहचरी के रू॰ में स्वीकार करने लगी है। दांपत्य जीवन में पति–पत्नी दोनों के बीच पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करने लगा है। जिससे निराशा, ऊब, संत्रास, भय, अकेलापन, विद्रुपता, अति स्वार्थी वृति आदि समस्याएँ उग्र रूप धारण कर चुकी है। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से जाँति–पाँति के कठोर बंधन से सामाजिक स्वतंत्रता का नर्माण हो चला है। धर्म, जाति, पंथ के बधनों को त्यागकर मनु" य रोटी–बेटी का व्यवहार करने लगा है। भारतीय नारी शिक्षा ग्रहण करने लगी है। पुरू" ाों के समकक्ष हर क्षेत्र में कार्य करनी लगी है। परंपरागत बंधनों को ठुकराकर नारी विरोधी बंधनों का प्रतिकार करने लगी है। अब भारतीय नारी भी समानाधिकार से कार्य करने लगी है। दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाने के प्रयास में है। भारतीय समाज में पाशचात्य सभ्यता एवं संस्कृति के अंधानुकरण से निर्माण व्यक्ति की आत्मकेंद्री एवं स्वार्थी मनोवृत्ति व अवमूल्यन का यथार्थ चित्रण मणिका मोहिनी की साहित्यिक रचना में प्रमुखता से चित्रत हुआ है। मनुष्य जीवन को युगीन परिवेश की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ प्रभावित करती है। तत्कालीन युग में मनुष्य जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाली प्रवृत्तियों को सहृदयी तथा संवेदनशील साहित्यकार ग्रहण कर प्रभावी ' ैली में साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से पाठक के सामने रखता है। मनु" य जीवन को प्रभावित करने वाली भौतिक–अभौविक परिस्थितियों का चित्रण साहित्यिक रचनाओं में होता है, तब वह रचना युगीन बोध दर्शानी है। साहित्य में चित्रिण तत्कालीन युगीन परिवेश का यथार्थ चित्रण युगबोध है।

अपने आस पास में घटित सामाजिक, आर्थिक, सांसकृतिक, धार्मिक, राजनीतिक युगीन परिस्थितियाँ, सामाजिक परिवर्तन, वैचारिक संघ" ा तथा मनु" य जीवन से सम्बधिंत भौतिक–अभौतिक परिवेश का चित्रण करता है। मणिकाजी का समग्र कहानी साहित्य समय सापेक्ष्य एवं अवमूल्यन बोध से संपन्न साहित्य है। जीवन में भोगे हुए अनुभवों के साथ समय सापेक्ष्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों का बोध व नैतिक ह्रास मणिका मोहिने के साहित्य की विशे" ाता रही है। पति–पत्नी दोनों के बीच अनैतिक सम्बन्धों के कारण जब बाह्य तीसरा व्यक्ति आता है, तब दोनों के बोच का संघ" ा दांपत्य जीवन को नष्ट कर देता है। आज के युग में इस तीसरे ने दांपतय जीवन पर बुरा असर डाला है। दांपतय जीवन की अनेक समस्याँओं को सामना करना पड रहा है, जिससे दांपतय सम्बन्ध नष्ट होकर भारतीय समाज की संरचनापर गंभीर परिणाम होने लगा है। दांपत्य संबंध, काम संबंधों के बदलते रूप पर रचनाकार मणिका ने बेबाकी से कलम चलाई है। आहार, निद्रा और मैथुन किसी भी जी की मूलभूत और जैविक जरूरतें होती हैं भारतीय प्राचीन साहित्य में भी काम को जीवन का मूल माना है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में विवाह पूर्व या विवाह बाह्य संबधों को अनैतिक और आजाएज माना जाता है । भारतीय सामाजिक व्यवस्था में कामभावना का नियमन करने के लिए सामाजिक दृष्टि में विवाह संस्कार को महत्वपूर्ण माना गया है। पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करनेवाला भारतीय समाज ' ारीरिक भूख मिटाने के लिए विवाह पूर्व, वैवाहिक और विवाह बाह्य संबंध रखनेलगा है। विवाहबाह्य संबंध दिन–प्रतिदिन बढ़ते दिखाई देते है। ''स्त्री–पुरूष का अपने जोवन साथी को छोड़ अन्य स्त्री–पुरूष की ओर आकर्षण, यौन अतृप्ति, पारिवारिक कलह एवं संत्रास के कारण भी समाज में यौन तृप्ति की प्राप्ति हेतू विवाहेत्तर संबध बनते हैं।''

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सेक्स जीवन का मूल और अविभाज्य अंग है किन्तु संस्कार, नैतिकता, संवेदना तथा मानवियता का बदलता हुआ चेहरा प्रभावहीन होने की वजह से सेक्स का कुरूप चेहरा दुनिया के सामने अनैतिक संबध, बलात्कार , विनयभंग आदि के माध्यम स दिखाई देने लगा है। स्त्री–पुरूषों में सेक्स के प्रति बढ़त आक" ॅाण से अनैतिक संबधों में बढ़ोत्तरी हो रही है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सेक्स अथवा कामजीवन को नैतिकता के तराजु में तौला जाता हैं विवाहेत्तर अथवा अनैतिक संबंध को पाप माना जाता हैं विवाहत्तर अथवा अनैतिक संबंध विवाह विच्छेदन, तलाक, आत्महत्या , हत्या आदि सामाजिक बीमारियों का कारण बनते जा रहा है। मणिका का कहानी साहित्य में दांपत्य जीवन में स्वछंद काम संबंध के कारण बनते–बिगडते रिश्तों का चित्रण हुआ है। जिसका प्रभाव पाठकों पर पड़ना स्वाभविक ही है।

निष्कर्ष :

1. मणिका मोहिनी के कहानी साहित्स में अवमूल्यन, स्पष्ट दिखाई देता है।
2. इनकी कहानी यथार्थ वादो कहानी है, वर्तमान जीवन में पुरूष वर्चस्ववादी समाज व्यवस्था में बेचैन नारी जीवन की पीडा त्रासदी का यथार्थता से चित्रण करती है।
3. वर्तमान महं पुरूषवर्चस्ववादी सामाजिक मान्यता में नारी के शारीरिक और मानसिक शोषण एवं नारी की परिवर्ती मनोवृत्ति का यथार्थ चित्रण मणिकाजी की कहानियों में दिखाई देता है।
4. मणिका की कहानी मानवी मन की कहानी है, जो पाठक को अपनी आप बीती ही लगती है।
5. नारी विरोध संस्कृति, संस्कार ओर सामाजिक मान्यता का विरोध मणिका मोहिनी की कहानियां में दिखाई देता है।
6. मानवी मन के मूल, अति नग्न रूप का यथार्थ चित्रण मणिका जी के कहानी में दिखाई देता है।
7. आहार, निद्रा और मैथुन इन जैविक जरूरतों में से सामाजिक प्रतिष्ठा, नैतिकता के डर से दमित मैथुन अतृप्त कामभावना का यथार्थ एवं बोल्ड एप्रोच के साथ चित्रण मणिका जी के साहित्य में परिलक्षित है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

8. भारतीय समाज व्यवस्था में प्रचलित नारी विरोध, दलित विरोध सामाजिक मान्यता संस्कृति का विरोध मणिकाजी के साहित्य में दिखाई देता है।
9. पाश्चात्य संभ्यता के अंधानुकरण को ही आधुनिकता समझने वाले भारतीय मानसिकता का प्रतीकात्मक चित्रण मणिका जी के अनेक चरित्रों में परिलक्षित होता है।
10. अतृप्त कामभावना से बेचैन लड़पनेवाली नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण मणिकाजी के साहित्य में किया गया है।

सन्दर्भ

माणिक मोहिनी :1992 ; प्रेम प्रहार , वैचारिकी संकलन , मयूरबिहार दिल्ली
" : 1992 ;कटधरे में ; शिकनीअजार्टमेन्ट्स दिल्ली
" : 1993 ; कटघरे में शिवानीअपार्टमेन्ट्स, दिल्ली
" : 1972 ; खत्म होने के बाद ,जनाना भारतीप्रथा दिल्ली
" : 1976 , अभी तलाश जारी हैं , नीलभ प्रकाशन इलाहबाद
" :1980 , स्वप्न दंश , विक्रांत प्रका. नई दिल्ली
" :1982 , अपना अपना सच , पंचशील प्रकाशन जयपुर
" :1995 , जग का मुजरा , अमर पब्लिकेशन नई दिल्ली